

रघुवर कृपा ( ९१ )

वाह वाह वाह वाह खुशिड़ी छाई अमड़ि अंडण में वजे  
वाधाई

रवि शशि खां भी सुन्दर बालकु जणियो अमड़ि सुख बाई॥

बाबा अमां जी तपस्या फली

आ साकेत मां सची निधिड़ी मिली आ  
जै जै जै जै जी धुनिड़ी मती आई सहेली श्री खण्डि सती  
जग हिति कारणि सन्त रूप में कृपा कई रघुराई॥

द्रिसी त बालक खे नेण ठरी पिया

नर नारियुनि खां घरिड़ा भुली विया  
आयो आहे सुघड़ कुमार परा प्रेम जो जणु अवतार  
ठंढ़िड़ी सुगंधि मई हीर लगी आ सभिनी जीवनि सुखदाई॥

शुभ गुण सभेई हथ जोड़े आप बालक साई अ ने अपनाया  
साई साई गुणनि भण्डारु सिय राघव जो सिकी लधो बारु  
दासनि वत्सल दीननि बंधू प्रेम भक्ति सरसाई॥

देव गगन मां गुल वर्षाईनि नाट नटियूं अची लादिड़ा गाइनि  
धनु धनु बाबा धनु धनु मैया सुन्दर सलोनी बालु भैया  
जड़ चेतन सभु द्रियनि आशीशूं सतिगुर थियेव सहाई॥

सतिगुर मैगसि नाम बुधायो वेद पुराण शोधे समुझायो  
माउ मिठी अ जी जीवन प्राण सब लोकनि जो करे कल्याण  
राम राम श्री राम जपाए प्रेम जी सरिता वहाई॥